भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका

महापजापति गोतमी

(दीर्घकाल तक भिक्षुणी बने रहने वालियों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका

महापजापति गोतमी

(दीर्घकाल तक भिक्षुणी बने रहने वालियों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

****

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकिानं भिक्खुनीनं
रत्तञ्ञूनं यदिदं महापजापतिगोतमी।"

–अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२३५)

"भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में दीर्घकालीनों
(दीर्घकाल तक भिक्षुणी बने रहने वालियों) में अग्र हैं
महापजापति गोतमी।"

****

महापजापति गोतमी

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

महापजापति गोतमी १

वर्तमान कथा १

महापजापति गोतमी की प्रव्रज्या ३

महापजापति गोतमी की प्रव्रज्या ३

गोतमी की उपसंपदा पर शंका-(१) ८

गोतमी की उपसंपदा पर शंका-(२) ९

भगवान द्वारा गोतमी को उपदेश १०

संक्षिप्त धर्मोपदेश हेतु प्रार्थना. १०

शिक्षापदों का पालन ११

संघ-दक्षिणा अधिक फलप्रद ११

भिक्षु-भिक्षुणियों के शिक्षापद १५

गोतमी की प्रार्थना १५

भिक्षुणियों से निजी सेवा लेने पर रोक १६

गोतमी के लिए शिक्षापद संशोधित १७

महापजापति गोतमी द्वारा सही वंदना १९

महापजापति गोतमी का परिनिर्वाण २५

दाह-संस्कार २६

गोतमी के प्रति भगवान के उद्गार २६

अतीत कथा २८

भगवान पदुमुत्तर का शासन-काल २८

बुद्धान्तर-काल २८

महापजापति गोतमी के उद्गार ३१

विपश्यना साहित्य ३३

विपश्यना साधना के केंद्र ३७

प्रकाशकीय

महामाया की छोटी बहन - महापजापति गोतमी महाराज शुद्धोदन से ब्याही गयी। सिद्धार्थ गौतम को जन्म देने के सात दिन पश्चात महामाया स्वर्ग सिधार गयी। महापजापति ने ही सिद्धार्थ को पाला-पोसा।

सिद्धार्थ पर उनका अपार स्नेह था। जब सिद्धार्थ ने गृहत्याग किया तब महापजापति ने अपने पति शुद्धोदन के साथ बड़ा करुण क्रंदन किया।

घर छोड़ने के बाद पहली बार सम्यक-संबुद्ध के रूप में जब सिद्धार्थ गौतम कपिलवस्तु आये तब उन्होंने नन्द और राहुल को प्रव्रजित कर लिया। कुछ वर्षों बाद जब अरहंत हुए शुद्धोदन का भी परिनिर्वाण हो गया, तब महापजापति ने भगवान बुद्ध से आग्रह किया कि वे उसे प्रव्रज्या दें। परंतु भगवान नहीं माने। उन्होंने भिक्षुणीसंघ नहीं बनाया।

कारण स्पष्ट था। जब कभी भिक्षुणियों को यात्रा करनी पड़ेगी तब उनकी रक्षा के लिए कुछ भिक्षुओं को साथ जाना पड़ेगा, जो अनुचित होगा। कोई अकेली भिक्षुणी वनप्रदेश में तप रही होगी तब किसी गृहस्थ युवक पर सवार होकर मार उसे दूषित करने का प्रयत्न कर सकता है, सफल भी हो सकता है।

ऐसे कारणों से भगवान भिक्षुणीसंघ की स्थापना नहीं करना चाहते थे। परंतु जब वह सिर मुँड़ा कर, पीले वस्त्र पहन कर, यशोधरा सहित राजघराने की ५०० महिलाओं को इसी भेष में अपने साथ लेकर, नंगे पांव पैदल चल कर वैशाली की कूटागारशाला में भगवान के पास पहुँची और रोते हुए उन सबको प्रव्रजित करने की प्रार्थना की, तब आनन्द के प्रबल आग्रह पर भगवान को स्वीकृति देनी पड़ी। उनके लिए कुछ विशिष्ट नियमों का पालन अनिवार्य कर, उन्हें प्रव्रजित किया और भिक्षुणीसंघ की स्थापना की। महापजापति ने विपश्यना साधना द्वारा कुछ दिनों में अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली। भगवान ने उसे भिक्षुणीसंघ में दीर्घकाल तक भिक्षुणी बनी रहने

वालियों में अग्र स्थान पर रखा। महापजापति ने जीवनपर्यंत अनगिनत दुखियारी महिलाओं को प्रव्रजित कर, विपश्यना साधना सिखा कर दुःखमुक्त किया।

वृद्धावस्था में जब महापजापति के महापरिनिर्वाण का समय आया तब वह भगवान को नमन करने आयी। उस समय उसने ये हृदयस्पर्शी उद्गार प्रकट किये -

अहं सुगत ते माता, त्वञ्च वीर पिता मम।

हे सुगत, मैं तुम्हारी दूधपायी माता हूं और तुम मुझे सुखद सद्धर्म में जन्म देने वाले मेरे पिता हो।

चीवर लेकर नमन करने आयी महापजापति गोतमी को भगवान ने पास बैठे, ध्यान करते हुए श्रावकों की ओर इशारा करते हुए कहा -

आरद्धवीरिये पहित्तत्ते, निच्चं दळ्हपरक्कमे।
समग्गे सावके पस्से, एसा बुद्धान वन्दना॥

- देख, इन श्रावकों को जो समग्र रूप से पराक्रम करते हुए साधना कर रहे हैं, यही बुद्धों की सही वंदना है।

एक अन्य प्रसंग में अपनी बहन मायामाया के प्रति प्रकट किये गये उसके उद्गार भी अत्यंत हृदयस्पर्शी हैं -

बहूनं वत अत्थाय, माया जनयि गोतमं।

- बहुतों के कल्याण के लिए ही माया ने गौतम को जन्म दिया।

भगवान बुद्ध के भिक्षु-श्रावकों एवं भिक्षुणी-श्राविकाओं के जीवन के प्रेरणादायी प्रसंग हम सबकी प्रेरणा का कारण बने जिससे विपश्यी साधक एवं साधिकाएं उनसे प्रेरणा पाकर अपनी जीवन-शैली का पुनरवलोकन कर इसका यत्किंचित परिष्कार कर सकें। इन मंगलभावों के साथ इस पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

विपश्यना विशोधन विन्यास